[Pandey *, Vol.6 (Iss.3): March, 2018] ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
(Received: Mar 01, 2018 - Accepted: Mar 31, 2018) DOI: 10.5281/zenodo.1232203

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

निमाड़ की सांस्कृतिक लोक चित्रकलाऐं

डॉ. अंजलि पाण्डेय [1]

[1] विभागाध्यक्ष, सहप्राध्यापक चित्रकला, महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल

सारांश

भारतीय लोक कलाऐं जीवन के आचार–विचार तथा लोक संस्कृति की नींव स्थापित करती है। निमाड़ की संस्कृति व सभ्यता, को लोकगीत, लोककथा, लोकचित्रों में देखा जा सकता है। विभिन्न तीज–त्यौहारों लोक चित्रों के बनाने में प्रतीकों का समावेश उनकी सामाजिकता में उपस्थिती को दर्शाते है। अनुष्ठानों के अवसर पर बनाये जाने वाले चित्रों के साथ भूमि अलंकरण की एक मांगलिक सुन्दर चित्र परम्परा का समानान्तर विकास हुआ है। भूमि अलंकरण में ज्यामितीय रूप के आकल्पन की प्रमुखता दर्शित होती है। भित्ती चित्रों में जीरोती, नाग, कुलदेवी, दशहरा, भाईदूज, सुरेती, अहोई अष्टमी, सांझाफूली,दीवाली हाते, मांड़ना, सातिया, चौक कलश आदि प्रमुख है। लोक चित्रों की मूल भावना रेखांकन की होती है। चित्रण के लिये लाल, पीला, नीला, हरा, काला और सफेद आदि प्राथमिक रंगों को कलाकार पारम्परिक विधि से तैयार करते है। लोक चित्रों में रंग विधान का कोई निश्चित नियम नहीं होता है व चित्रों को बनाने की शैलियॉ रूढ़ि की तरह होती है। जीवन की प्रत्येक गतिविधि को चित्रों में व्यक्त करने की कोशिश लोकचित्र कलाकार करता है। वर्तमान आधुनिकता के प्रभाव के कारण चित्र परम्परा से जुड़े क्रिया कलाप अब कम होते जा रहे है। आवश्यकता है कि इन कलारूप को सहेजा जाए जिससे यह कला पल्लवित पुष्पित होती रहे।

मुख्य शब्द – लोक संस्कृति, रीति–रिवाज, तीज–त्यौहार, जिरोती, मान्यताए

Cite This Article: डॉ. अंजलि पाण्डेय. (2018). "निमाड़ की सांस्कृतिक लोक चित्रकलाऐं." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 6(3), 315-320. https://doi.org/10.5281/zenodo.1232203.

प्रस्तावना

भारतीय जनमानस की लोक कथाऐं एवं लोक साहित्य, परोपकार तथा प्राणीजगत के रक्षार्थ, लोक कल्याण के सिद्धांत को धारण किये हुऐ है। भारतीय लोक कलाऐं जीवन के आचार–विचार तथा लोक संस्कृति की नींव स्थापित करती है। यहॉ लोक कथाओं तथा लोक संस्कृति में किसी धर्म विशेष की प्रधानता नहीं होती है। स्थानीय रीति–रिवाजों के अनुरूप लोक कलाओं का संसार सृजित होता है। लोक संस्कृति किसी क्षेत्र विशेष को अन्य क्षेत्रों से स्वतंत्र पहचान प्रदान करती है।[1]

म.प्र. का निमाड़ अंचल लोक कला से समृद्ध है लोककला लोकजीवन की अमूल्य निधी है। रंग एवं रेखाओं के द्वारा विभिन्न आकृतियों की अभिव्यक्ति लोक चित्रकला में सन्नहित है। निमाड़ लोककलाओं का घर है। लोककलाऐं लोक की धरोहर है एवं लोक का आशय जन–जीवन से है। निमाड़ अंचल का वास्तविक स्वरूप निमाड़ की परम्पराऐं, निमाड़ की संस्कृति व सभ्यता, निमाड़ के लोकगीत, लोकसंगीत, लोककथा, लोकशिल्प, लोकनाट्य, लोकव्यवहार एवं लोकचित्रों में देखा जा सकता है।

निमाड़ की सांस्कृतिक लोक चित्रकलाओं के विभिन्न स्वरूप है। लोकसंस्कृति के क्षेत्र में चित्रांकन की परम्पराऐं भित्ती चित्रों (दीवार चित्रण) और भूमि अलंकरण के रूप में मिलती है। इनमें विभिन्न तीज–त्यौहारों एवं अनुष्ठानों के अवसर पर बनाये जाने वाले चित्रों के साथ भूमि अलंकरण की एक मांगलिक सुन्दर चित्र परम्परा का समानान्तर विकास हुआ है। सांस्कृतिक परम्परा में मिथकीय, पौराणिक गाथाओं और कथाचित्रों के साथ विभिन्न लोक अभिप्रायों का अंकन और आकल्पन इन चित्रों में किया जाता हैं।[2]

भित्ती लोक चित्रांकन में प्रकृति, पौराणिक और स्थानीय देवलोक, कल्पना जगत, विशेष मंतव्यों एवं अर्थों को प्रकट करने वाले लोक अभिप्रायों को अंकित किया जाता है। भूमि अलंकरण में ज्यामितीय रूप के आकल्पन की प्रमुखता दर्शित होती है। निमाड़ अंचल में भित्ती चित्रों को दो प्रकार से निर्मित किया जाता है। पहला रंगों से बनाये जाने वाले एवं दूसरा गोबर मिट्टी से बनाये जाने वाले भित्ती चित्र। रंगों से बनाये जाने वाले भित्ती चित्रों में जीरोती, नाग, कुलदेवी, दशहरा, भाईदूज, सुरेती, अहोई अष्टमी, दीवाली हाते, मांड़ना, सरस्वती, साती, सातिया, चौक कलश आदि प्रमुख है। गोबर मिट्टी से बनाये जाने वाले अलंकरणों में सांझाफूली, नरवत, गोरधन, गुदना आकृतियां, पगल्या (पदचिन्ह) आदि प्रमुख है। मिट्टी के पात्रों पर किये गये रेखांकनों को भी लोक चित्रकला के अंतर्गत विशेष महत्व के साथ रखा जाता है। भूमि पर बनाये जाने के कारण इन्हें भूमि अलंकरण या मांड़ना कहा जाता है। ऐपन, अल्पना, कोलम धरती मांड़ना के ही प्रकार है।[3]

लोक चित्रों की मूल भावना रेखांकन की होती है। लोक चित्रों की आकृतियॉ रेखा आधारित होती हैं। रेखा ही किसी लोक चित्र को चौकोर, आयताकार अथवा गोलाकार बनाती है। बिन्दु से रेखा, रेखा से ज्यामितीय आकृतियों का निर्माण होता है। चित्रों की रेखाऐं स्पष्ट व पूर्ण होती है। टूटी रेखाओं को शुभ नहीं माना जाता है। निमाड़, मालवा एवं राजस्थान में धरती के मांड़ने आज भी गेरू और खडिया से बनाये जाते है।[4] रंग और रेखाओं में प्रतीक और प्रतीकार्थ भी होते है।[5]

ग्रामीण अंचल में सुलभ उपलब्ध रंग सामग्री का ही चित्रण में उपयोग किया जाता है। गॉव की मिट्टी एवं रंगों को कलाकार पारम्परिक विधि से तैयार करते है। चित्रण के लिये लाल, पीला, नीला, हरा, काला और सफेद आदि प्राथमिक रंग प्राचीन समय से उपयोग में लाये जा रहे है। तुअर काठी अथवा बांस की पतली लकड़ी पर रूई में धागा लपेटकर कलम बनाने की प्रथा भी बहुत पुरानी है।[6] वर्तमान बाजारवाद के प्रभाव के फलस्वरूप कलाकार अब तैयार ब्रश से भी कार्य करने लगे है। ग्रामीण महिलाऐं आज भी अपने पारम्परिक चित्र नारियल की नरेटी (नारियल के ऊपरी कड़े खोल का कटोरीनुमा पात्र) में रंग घोलकर काड़ी की कलम से बनाती है। चित्रों में प्रायः मिश्रित रंगों का चलन नहीं के बराबर होता है।

रंग विधान प्रायः मुक्त होता है पर परम्परागत होता है। लोक चित्रों में रंग विधान का कोई निश्चित नियम नहीं होता है। कलाकार कल्पनाओं के आधार पर रंगों का चयन करता है। चित्र एक रंग का होगा अथवा अनेक रंगों से निर्मित होगा यह चित्र बनाने की पुरातन परम्परा पर निर्भर होता है।[7]

जिरोती को बहुरंगों से बनाने की परम्परा है तो नाग दीवार चित्रों को एक अथवा दो रंगों से बनाया जाता है। चित्रों में रंगों के स्थान भी निश्चित होते है। रंग एवं रेखाओं का क्रम भी निश्चित रहता है तथा रेखाओं के आकार भी निश्चित रहते है। जो चित्र जिस पारम्परिक ढंग से बनाया जाता है वह उसी ढंग एवं तरीके से बनाया जाता है। लोक चित्रकार पूरी कोशिश करते है कि उनके पूर्ववर्तियों द्वारा जिस तरह से पर्व व त्यौहार पर रंग संकलित करके, रंग घोलके, कलम कूची बनाके, दीवार का चयन करके, चित्र की पृष्ठभूमि तैयार करके चित्र की आकृतियों का क्रम तैयार करने का कार्य किया करते थे वह भी उसी प्रकार करने का प्रयास करते हैं।[8]

[Pandey *, Vol.6 (Iss.3): March, 2018] ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
(Received: Mar 01, 2018 - Accepted: Mar 31, 2018) DOI: 10.5281/zenodo.1232203

निमाड़ी लोक चित्रों में रंग देवी–देवता, धरती–आकाश, प्रकृति आदि पूरें ब्रम्हाण्ड की प्रवृत्तियों को व्यक्त करते है। चित्र में लोक कलाकार प्रायः परम्परिक रंगों का उपयोग करते हैं। परम्परा से चले आ रहे मिट्टी या जल रंगों का प्रयोग अधिकतर किया जाता है इसके कारण रंगों की पवित्रता एवं गुणवत्ता नैसर्गिक रूप में बनी रहती है। रंगों का मनुष्य के मन, मस्तिष्क और शरीर पर गहरा प्रभाव पड़ता है।[9] चाहे निमाड़ के चित्र हो अथवा मालवा के अथवा मधुबनी के सबमें जीवन के विभिन्न रंग खिलते हैं।

लोक चित्रों के विषय प्रायः पारम्परिक, पौराणिक, सामाजिक एवं लोक लुभावन होते है। देवी–देवता लोक चित्रों के मुख्य विषय होते है। प्रत्येक अंचल के स्थानीय देवी–देवताओं के चित्रों का अंकन लोक चित्रों में होता है। पृथ्वी, आकाश, जल, अग्नि, वायु पॉचों तत्व इन चित्रों में सदैव सम्मिलित रहते हैं। चित्रों में सारी प्रकृति मौजूद रहती है। गीत, कथा, गाथा, वार्ता, मिथक सब चित्रों में दर्शायें जाते है। जीवन की सारी गतिविधियॉ लोक चित्रों में दृष्टिगोचर होती है लौकिक और अलौकिक दोनों ही संसार को हम लोक चित्रों में देख सकते है । इस प्रकार ये लोक चित्र रंग रेखा की सृष्टि के अद्वितीय और विशिष्ट आयाम है।[10]

लोक चित्रों के बनाने में आस्था और विश्वास तो है ही, प्रतीकों का समावेश उनकी सामाजिकता में उपस्थिती को दर्शाते है।[11] निमाड़ में हरियाली अमावस्या को जीरोती की लोक परम्परा अत्यन्त प्रचलित है जिरोती, निमाड़ का ऐसा पर्व है जिसमें परिवार की सुख, समृद्धि व अखण्डता की कामना निहित है। इसका अंकन घर की बहू, बेटियॉ करती है।

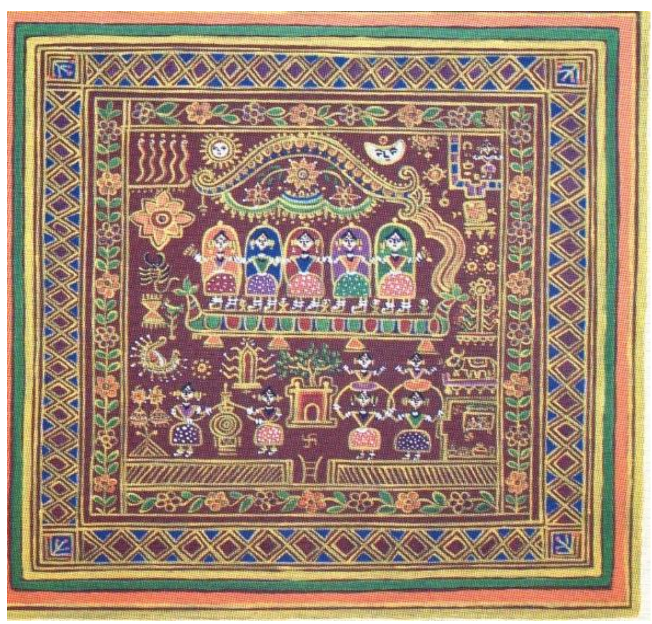

जिरोती देवी की प्रतिष्ठा हेतु पैर के नीचे सिंहासन, देवी की पॉच आकृतियॉ बनाई जाती है ऊपर के कोने में रसोई घर, चॉद–सूरज, छोटे–छोटे बालक, तुलसी, बड़, स्वास्तिक, देवी के आभूषण आदि का चित्रण होता है। एक तरफ चौपड़ खेलते बच्चें, दही बिलौने वाली गाय, तथा पनिहारिन का अंकन किया जाता है। जिरोती के चित्र हर परिवार की अपनी परम्परा के अनुसार बनाये जाते है। इन चित्रों में उन्हीं रंगों का उपयोग होता है जो ग्रामीण अंचल में सहज रूप से उपलब्ध हो। ये चित्र केवल भित्ती चित्र न होकर एक आस्था व विश्वास में परिणित हो जाते है जो परम्परा व संस्कृति को आज भी जीवित रखे हुऐ है।[12]

[Pandey *, Vol.6 (Iss.3): March, 2018] ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
(Received: Mar 01, 2018 - Accepted: Mar 31, 2018) DOI: 10.5281/zenodo.1232203

नाग पंचमी– श्रावण शुक्ल की पंचमी के दिन नाग पंचमी का त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन नाग देवता का चित्र बनाकर पूजा की जाती हैं। इसे तीन तरह से बड़ी सावधानीपूर्वक बनाया जाता है जिनमें कोठड़ी का नाग, जनेऊ का नाग और कुण्डली का नाग सफेद पृष्ठभूमि पर काले रंग से बनाये जाते है।

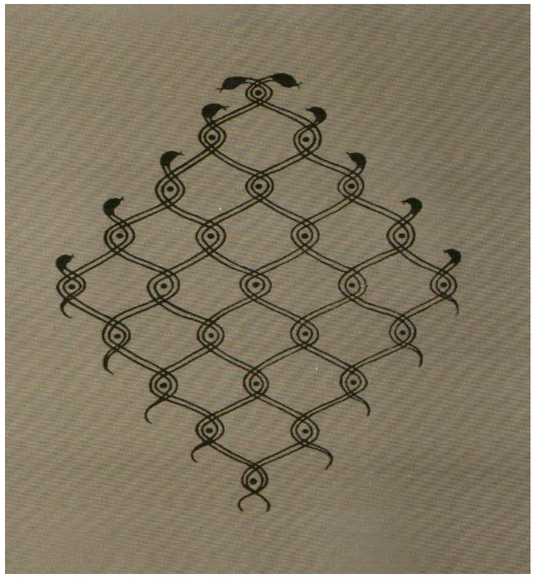

दशहरा– आश्विन मास की विजया दशमी को दशहरा कहते है। इस दिन दशहरे का चित्र बनाकर उसकी पूजा की जाती हैं। दशहरा का चित्र केवल सफेद रंग से भूमि पर बनाया जाता है।

सांझा माता– सांझा माता (सांझा फूली) क्वांर मास के पित्र पक्ष में मनाई जाती है यह निमाड़ की किशोरियों का प्रीय त्यौहार है। ताजे गोबर और फूलों की पंखुडियों तथा चमकीली पन्न्यिों आदि से प्रतिदिन भिन्न–भिन्न आकृतियॉ ऊकेरी जाती है। अपने विशिष्ट अंकन तथा उत्तम रंग संयोजन से परिपूर्ण यह लोक कला का सुंदर उदाहरण है।

[Pandey *, Vol.6 (Iss.3): March, 2018] ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
(Received: Mar 01, 2018 - Accepted: Mar 31, 2018) DOI: 10.5281/zenodo.1232203

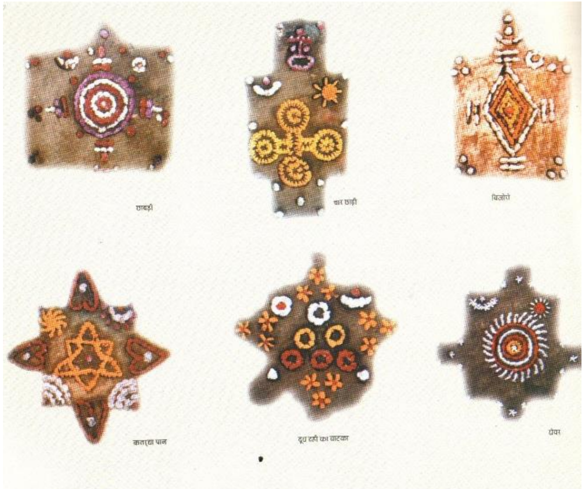

पगल्या (पदचिन्ह)– निमाड़ में नवजात शिशु के जन्म के अवसर पर पगल्या बनाकर भेजे जाने का रिवाज हैं। सर्वप्रथम लाल या गुलाबी रंग से कागज पर सुंदर बार्डर बनाकर फूल–पत्तियों से आलेखन किया जाता है। मध्य भाग में बच्चे के पदचिन्ह प्रतिकात्मक रूप से बनाये जाते है। भारत में पदचिन्ह पूजने की परम्परा प्राचीन काल से ही प्रचलित है।

लोक चित्रों को बनाने की शैलियॉ रूढ़ि की तरह होती है। पीढ़ी दर पीढ़ी चित्रण की शैली एक जैसी होती है फिर भी लोक चित्रों में एक संतुलन होता है। चित्रित आकृतियॉ भले ही आकार–प्रकार में अटपटी और बिखरी हुई हो सकती हैं पर उनमें एक सौंदर्य होता है। जीवन की प्रत्येक गतिविधि को चित्रों में व्यक्त करने की कोशिश लोकचित्र कलाकार करता है।

वर्तमान आधुनिकता के प्रभाव के कारण अब निमाड़ी चित्रांकन की परम्परा वहॉ के जनजीवन से धीरे–धीरे विलुप्त होने की ओर अग्रसर होती जा रही है। भौतिक जीवन की चकाचौंध ने ग्रामीण जन–जीवन के आचार–व्यवहार में इतना परिवर्तन कर दिया है कि तीज–त्यौहारों पर भी इसका विपरीत प्रभाव दिखने लगा है। मांगलिक प्रसंग और अनुष्ठान भी अब उस आस्थाभाव से नहीं होते है जिसमें लोक कलाऐं जीवित रहती आयी है। ग्रामीण अंचलों के घर परिवारों में चित्र परम्परा से जुड़े क्रिया कलाप अब कम होते जा रहे है। सांस्कृतिक बोध को आगे बढ़ाने वाले पुरूषों एवं महिलाओं की संख्या में भी कमी आ रही है।[14]

इन विसंगतियों के बाद भी निमाड़ की चित्र परम्परा अपने आंतरिक सौंदर्य के बल पर समूचे जगत की संवेदनाओं को प्रभावित करने की ताकत रखती है। सबसे आवश्यक यह है कि इन निमाड़ी धरोहर के कलारूप को सहेजा जाए जिससे यह कला पूर्व की भॉति ही पल्लवित पुष्पित होती रहे।

सन्दर्भ :

[1] पाण्डेय अंजलि : वर्तमान में लोक कथानकों एवं कथा चित्रों का सामाजिक सरोकार, राष्ट्रीय शोध सेमीनार, खरगोन म.प्र. 2014
[2] शुक्ल नवल संपादक : परम्परा–म.प्र. की जनजातीय और लोक चित्र हस्तशिल्प, जनजातीय और लोक कला परिषद 1998 पृष्ठ 25
[3] निर्गुणे बसंत :जिरोती, म.प्र. के निमाड़ जनपद की चित्र कला, म.प्र. आदिवासी और लोक कला अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद, भोपाल 2006

[4] साक्षात्कार : श्रीमती मीरा बाजपेयी, बड़ी सादड़ी, राजस्थान।
[5] निर्गुणे बसंत : लोक संस्कृति म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 2006 पृष्ठ 120
[6] साक्षात्कार : श्रीमती गीता पाण्डेय, इन्दौर म.प्र.
[7] वही
[8] निर्गुणे बसंत : जिरोती म.प्र. के निमाड़ जनपद की चित्र कला, म.प्र. आदिवासी और लोक कला अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद, भोपाल 2006 पृष्ठ 37
[9] कुमार विमलः सौन्दर्य शास्त्र के तत्व, दिल्ली,1997, पृष्ठ 259
[10] निर्गुणे बसंत : जिरोती म.प्र. के निमाड़ जनपद की चित्र कला, म.प्र. आदिवासी और लोक कला अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद, भोपाल 2006 पृष्ठ 38
[11] उपाध्याय रामनारायण : निमाड का सांस्कृतिक इतिहास वि.भा. प्रकाशन नागपुर 1980
[12] निर्गुणे बसंत : लोक संस्कृति, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2006, पृष्ठ 120
[13] सिटोके सुषमा :चौमासा, म.प्र. आदिवासी और लोक कला अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद, भोपाल वर्ष–19. अंक–.59, 2002, पृष्ठ 116 –117
[14] तोमर रमेश चंद्रः चौमासा, म.प्र. आदिवासी और लोक कला अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद, भोपाल, वर्ष–19. अंक–.59, 2002, पृष्ठ 110–115
[15] सिटोके सुषमाः चौमासा, म.प्र. आदिवासी और लोक कला अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद– भोपाल, वर्ष–19. अंक–.59, 2002, पृष्ठ 116–117

चित्र–साभार

[16] सिटोके सुषमाः जिरोती म.प्र. के निमाड़ जनपद की चित्र कला, म.प्र. आदिवासी और लोक कला अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद, भोपाल 2006

*Corresponding author.
E-mail address: anjali_pandey11@yahoo.com